शास्त्रीय बंदिश एवं सौदर्य तत्व

डॉ. हरिओम सोनी
सहायक प्राध्यापक (संगीत)
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविधालय सागर (म.प्र.)

सारांश -

भारतीय शास्त्रीय परंपरा में बंदिश संगीत प्रस्तुति का प्रमुख आधार है शास्त्रीय संगीत में संगीत प्रस्तुति की विषयवस्तु बंदिश होती है। बंदिश नाम से स्पष्ट है कि गीत गत या कायदा पेश्कार में सम्यक रूप से बंधी हुई रचना जोकि शास्त्रीय परंपरा के अनुरूप नियमों में बंधी हुई तथा नियमों का पालन करते हुए जिसकी रचना की गई हो ऐसी रचना ही बंदिशें है बंदिश-गायन, वादन एवं नृत्य तीनों विधाओं में समान रूप से पायी जाती है। अधिकांश बंदिशे विस्तारशील होती है एवं कुछ बंदिशें अविस्तारशील या फिक्स कंपोजीशन होती है दोनों का अपना अलग-अलग महत्व है।

मुख्य शब्द - बंदिश, शास्त्रीय, सौन्दर्य, भावनाएं, संगीत।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में बंदिशों का निर्माणकर्ता दोहरी भूमिका का निर्वाह स्वयं ही करता है। बंदिशों के निर्माण व उसके विस्तार का कार्य प्रतिष्ठित संगीतज्ञ, गायक, संगीत शिक्षक या संगीत के विधार्थियों के द्वारा किया ही किया जा जाता है। ऐसा कभी नहीं होता कि रचना का कार्य कोई और करे और प्रस्तुति कर्ता कोई और रचनाकार बंदिशों का निर्माण स्वयं के लिए एवं विघार्थियों के लिए ही करता है।

इस प्रकार भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायक/वादक बंदिशों का निर्माता अर्थात कंपोजर स्वयं ही होता है तथापि इसके लिए कंपोजिग की अलग से कोई विशेष शिक्षा दीक्षा नहीं दी जाती बल्कि कंपोजीशन की शिक्षा शास्त्रीय संगीत की शिक्षा में स्वयं ही समाहित रहती है। यदि इसे इस प्रकार कहा जाए कि जिस समय विद्यार्थियों को गायन/वादन की शिक्षा दी जाती है ठीक उसी समय विभिन्न प्रकार से बोलआलापों द्वारा गीत की शब्दावलियों के द्वारा विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है जिससे नई-नई रचनाओं की सृष्टि होती है। जोकि बंदिशों की निर्माण की सूक्ष्म प्रक्रिया है। ठीक इसी प्रकार का क्रम मंच पर भी परिलक्षित होता है। जिसमें गायक विस्तार क्रम के दौरान विभिन्न बोलतानों द्वारा विभिन्न प्रकार से छोटी-छोटी कंपोजीशन का निर्माण करता चलता है। इस प्रकार यदि यह कहा जाए कि प्रस्तुति के दौरान कंपोजीशन का क्रम चलता है तो गलत नहीं होगा।

अब यदि वादन तबला वादन के क्षेत्र में देखा जाए तो बंदिशों का निर्माण या विस्तार क्रम के स्वरूप में समानता दिखाई देती है। तबला वादन में बंदिश को पल्टों के द्वारा विस्तार किया जाता है। और विस्तार के इस क्रम में छोटी-छोटी नई बंदिशों का निर्माण होता चलाता है।

यहाँ पर पल्टों को बंदिशों के समकक्ष इसलिए रखा जा रहा है। क्योंकि विस्तार क्रम में किसी एक पल्टे को मूल बंदिश का आधार प्रदान करते हुए पल्टे का भी पल्टा भी किया जाता है, जिसको विस्तार का विस्तार भी कहा जाता है। इस प्रकार बंदिशों का निर्माण होता चला जाता है इस प्रकार गायक/वादक अपनी प्रस्तुति के समय साथ ही विद्यार्थी अपने रियाज के समय अनेक प्रकार से विस्तार करता हुआ बंदिशों में नई-नई और सुंदर जगह खोजता रहता है तथापि ऐसा करते समय सभी नवीन जगह और सभी नए आईडियास या नवीन रचनाओं का निर्माण वे सभी नयी आईडियास एक बार गाने बजाने के साथ ही पीछे-पीछे विस्मृत होते चले जाते है। परंतु यदि सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाए तो बंदिशों के निर्माण या उनके विस्तार में सौदर्यता का समावेश यही से होता है।

सौदर्य तत्वों की भूमिका/सौदर्य का निर्माणः गायन/वादन में सौदर्य के समावेश के लिए विभिन्न प्रकार के संसाधनों का प्रयोग किया जाता है। जैसे लय एवं विभिन्न लयकारियों के विभिन्न प्रकारों का प्रयोग, राग में विकृत स्वरों के उचित प्रयोग। सौदर्यशास्त्र ही स्वयं अपने आप में एक वृहद शास्त्र है। जिसे हम अपने संगीत में समाहित करके सौदर्यपूरक बंदिशों का निर्माण कर उनका सुंदरतम विस्तार कर रस की निर्मिती कर सकते है। तथापि संगीत का विद्यार्थी होने के नाते यहाँ संपूर्ण सौदर्यशास्त्र का अधिक विवरण ना करते हुए। इस बात पर दृष्टिपात किया जा रहा है वह कौन सा सूक्ष्म तत्व है जिसके प्रयोग के द्वारा सुदर रचनाओं की सृष्टि होती है। यहाँ पर यह निश्चित रूप से नही कहा जा सकता कि जितनी भी सुंदर बंदिशों या सुंदर रचनाए आज हमारे पास है उनके रचियताओं ने सौदर्य शास्त्र या किसी विशेष शास्त्र या किसी विशेष नियम पद्धति को अपनी रचनाओं में लागू किया हो तभी उनमें सौदर्यात्मकता की सृष्टि हुई हो।

मेरे दृष्टिकोण में सुंदर बंदिशों के निमार्ण या उनके सुंदरतम विस्तार क्रम में मानवीय भावनाओं का मुख्य योगदान होता है। जिस समय हमारी मानवीय भावनाएं उत्साह एवं उल्लास से ओत-प्रोत हो एवं हमारा मन आनंदित हो तो निश्चित रूप से हमारे मन में सुंदर विचार आयेगें और उस समय बंदिश निमार्ण का कार्य या उसके विस्तार का कार्य किया जाना चाहिए और इस प्रकार से निर्मित रचनाओं में निश्चित ही रस की सृष्टि होगी। और इसके विपरीत यदि हमारा मन असामान्य अवस्था में होगा अथवा क्रोध, अथवा नकारात्मक विचारों, से भरा होगा या हमार मन दुःखी होगा तो परिणाम सुंदरता के विपरीत ही आयेगे।

अब यहाँ प्रश्न यह उठता है कि हमारी मन : स्थिति (रचनाकार की मनोदशा) उस स्तर या उस प्रकार की कैसे बने जिसमें संगीतकार गायक/वादक स्वयं को संगीत के रसास्वादन में सराबोर पाता है? जिससे उसे स्वयं को एवं श्रोताओं को संगीत के चरम आनंद की अनूभूति होती है। इस समय आने वाले विचारों को हम अपने संगीत में लागू करते हुए सुंदरतम बंदिश एवं उनका सुंदरतम विस्तार कर सके या कैसे हम अपने संगीत को प्रभावी बना सके?

इन सभी प्रश्नों के उत्तर मे यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार की मनः स्थिति सभी पैदा हो सकती है जब एक संगीतकार पूरी तन्मयता के साथ संगीत साधना या संगीत के रियाज में डूबा हो या बहुत अच्छा संगीत प्रस्तुत कर रहा हो, एक संगीतकार के लिए यह वह समय होता है जब उसकी मानसिक अवस्था आनंदित एवं प्रफुल्लित अवस्था में होती है, ऐसी मानसिक अवस्था में अनेको अनेक नए-नए विचार मानव मन में आते है और आने वाला प्रत्येक विचार या छंद अपने पिछले विचार से नया ताजा और एक नई प्रकार की ऊर्जा एवं सुगंध लिए पैदा होता या होता है और इस प्रकार विचार निर्माण की यह प्रक्रिया प्रकृति द्वारा मानव को प्रदत्त एक सहज प्रक्रिया है इस प्रकार की सृजन शक्ति सभी मनुष्यों में समान रूप से पायी जाती है जरूरत है तो उसे लागू करने की अंतर केवल उनके प्रकारों में होता है जिस प्रकार एक ही विषय वस्तु पर प्रत्येक व्यक्ति मत अलग-अलग होता है।

इस प्रकार मानव मन या एक संगीतकार का मन या उसकी मानसिक स्थिति सृजन की उस अवस्था को प्राप्त कर लेती है जिसमें वह अपने शत् प्रतिशत कला कौशल का प्रयोग करते हुए अपनी बंदिशों एवं उसके विस्तार क्रम एवं संपूर्ण संगीत में लागू करते हुए उत्तम एवं अतिउत्तम संगीत का निर्माण कर सकता है।

इतनी बात करने के पश्चात् अब यह प्रश्न मन में उत्पन्न होता है कि क्या इस प्रकार की मानसिक अवस्था एवं उससे सृजित नवीन विचार एवं बंदिशों का निर्माण कार्य केवल कागज कलम के उपयोग से हो सकता है? जैसा कि वर्तमान स्कूली शिक्षा में होता है सीधे-सीधे कापियों में आलाप तान या फिर कायदे पेशकार के पल्टे गणित की मात्राओं को पूरा करते हुए लिख दिए जाते है? और इसका उत्तर निश्चित नहीं में ही होगा। इस बात से कम से कम कम से कम इतना तो स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि क्यों प्राचीन संगीत विद्वान एवं घरानेदार संगीत गुरु संगीत की शिक्षा में कागज कलम के उपयोग पर ज्यादा जोर नहीं देते थे एवं सीना व सीना शिक्षा ही प्रचलन में थी। यदि शास्त्रीय नियमों का पालन करते हुए एवं राग एवं ताल में बंदिशों का निर्माण कार्य केवल कागजों पर किया गया होता तो शायद आज हमारे पास सुंदर बंदिशों एवं सुंदर संगीत की इतनी विराट परंपरा नहीं होती। कागजो पर बंदिशो के निर्माण कार्य से केवल बाहरी स्वरूप को तो निर्मित किया जा सकता है जोकि नियमों के पालन से या गणित की मात्राओं से पूरा हो सकता है परंतु उसमें प्राण फूकने का कार्य मस्तिष्क नहीं वल्कि हृदय की अंतरतम गहराईयों से ही संभंव है। और इन गहराईयों तक पहुचने में विशेष परिस्थितियों का निर्माण संगीत के साधना के माध्यम से ही संभव है जो कि सहज ही उत्पन्न होता है भौतिक रूप से स्वयं के द्वारा ऐसा नहीं किया नहीं किया जा सकता जैसे हम सोचे कि आज मै अपने रियाज के दौरान किसी विशेष बंदिश या कोई रचना करूंगा ऐसा साधारणतः नही क्योंकि यह निश्चित नहीं उस समय हमारे मन मस्तिष्क के तार हमारी हृदय की गहराइयों तक पहुंचे या ना पहुंचे क्योंकि संगीत कला है विज्ञान नहीं तथापि यदि विज्ञान होता तो शायद संभव भी हो जाता।

अतः निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि केवल कागज कलम का प्रयोग करते हुए मात्राओं, छंदो या स्वर समूहों को शास्त्रीय नियमों में बांध देने मात्र से ऐसी बंदिशों एवं उनके विस्तार का निर्माण नहीं किया जा सकता है जिनको हम सुदंरता या विशिष्टता की श्रेणी में रख सकें। अतः इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि जिस समय हम अपने संगीत का रियाज कर रहें हो और हम सृजन के चरम पर हो तो समय हमारे मन में सुंदर विचार

आये या कोई आइडिया जनरेट हो तो उस सभी विस्तार क्रमों या विचारों को कई-कई बार दोहराते हुए याद कर ले या फिर उस नवीन सृजित विचारों को लिख लिया जाए क्योंकि इस समय कागज कलम का उपयोग किया जाता उचित जान पड़ता है अन्यथा उनका विस्मृत हो जाना निश्चित है। क्योंकि यही से उस प्रकार के बंदिशों का एवं विस्तार का निर्माण संभव है जिसे हम विशिष्टि या सुंदयता युक्त श्रेणी में रख सकेंगे। तथापि इस समय कागज कलम का प्रयोग किया जाऐ तो हो सकता है कि विचारों के सृजन का तारतम्य टूट जाए और आगे आने वाला नया विचार उतनी ही सुंदरता लिए ना हो या यह भी हो सकता है कि आने वाला नया विचार विस्तार क्रम अलग थीम के साथ आये।

अतः इस प्रकार से यदि बंदिश र्निमाण व विस्तार क्रम का कार्य किया जाए आने वाले परिणाम निश्चित ही सकारात्मक होगें। एवं बंदिशे जीवंत हो उठेगी एवं उनके विस्तार में प्राणों के संचार की ऐसी अनुभूति होगी जिसकी अभिलाषा प्रत्येक संगीतकार एवं संगीत श्रोता को होती है।

संदर्भः

1. भृगुवंशी डॉ. शिखा, "संगीत शास्त्र एवं प्रदर्शन" कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स 4697/5-21 अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली - 110002 वर्ष- 2013
2. कुमार डॉ. रीना "हिन्दुस्तानी संगीत का अवलोकन" कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स 4697/5-21 अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली - 110002 वर्ष- 2008
3. वर्मा डॉ. अमित कुमार, "अंतर्मन का संगीत", कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स 4697/5-21 अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली - 110002 वर्ष- 2012
4. साक्षत्कार - डॉ. अलखनंदा पलनीटकर (भूतपूर्व संगीत विभागअध्यक्ष डॉ. हरिसिंह गौर वि.वि. सागर) विभिन्न अंतरालो पर चर्चा।
5. साक्षत्कार - पं. देवेन्द्र वर्मा वरिश्ठ भारतीय षास्त्रीय संगीतज्ञ नई दिल्ली, विभिन्न अंतरालों पर चर्चा।

❖ ❖ ❖